श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

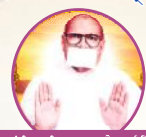

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

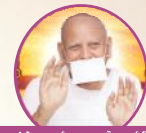

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अगस्त - प्रथम, अंक - 21 | विक्रम संवत् - 2083 | वीर संवत् - 2552 | ईस्वी सन् - 2026

शिव संदेश

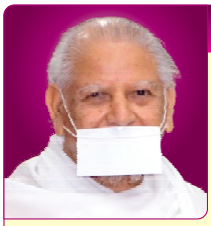

अध्यात्म से युक्त हो हमारा चातुर्मास

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

भारत की भूमि पर अवसर्पिणी काल के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव से लेकर प्रभु महावीर तक अनेकों राज्य, सत्ता आई और चली गई पर इन सभी राज्य, सत्ता पर धर्म, संस्कृति व अध्यात्म के संस्कार थे। उन सभी राजाओं पर तीर्थंकरों द्वारा प्राप्त ज्ञान का अंकुश था। जो भी सत्ता पर बैठता था, पहले वह गुरुकुल में धर्म व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता था।

उसमें जो योग्य व धार्मिक व्यक्तित्व होता उसे राजा बनाया जाता था। उस पर धर्म का अंकुश होता था, वह प्रजा में भी धर्म संस्कृति के संस्कार फैलाने में सहयोगी बनता था। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा लेने से पूर्व राज्य किया था, जनता को असि-मसी व कृषि का ज्ञान दिया था, तब यह भूमि कर्म भूमि बनी। कर्म भूमि में वे विरक्त होकर प्रथम साधु बनकर एकान्त मौन साधना में प्रवेश कर गये। उन्होंने राज्य सत्ता अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती को सौंप दी। तब से लेकर आज तक धर्म के साथ राज सत्ता चल रही है।

प्रत्येक राजा से लेकर प्रजा तक धर्म के साथ जीवन जीने की कला को तीर्थंकरों, आचार्यों ने प्रशिक्षण प्रदान किया, जिसे हम आज जैन संस्कृति, आदि संस्कृति कहते हैं। जिसमें जीव को स्वच्छंदता से मुक्त करने की विधि प्रदान की गई है। उस आध्यात्मिक साधना की विधि को ही ज्ञान कहा है।

जिसे स्व का बोध नहीं उसे अज्ञानी कहा जाता है। जिसे स्व-पर का भेद-विज्ञान प्राप्त हो गया वह ज्ञानी कहलाया। ज्ञानी व्यक्ति वही है जिसे अपने व पराये का ज्ञान होता है उसे हम समझदार कहते हैं ऐसे ज्ञानी समझदार व्यक्ति परतन्त्रता से मुक्त होकर अध्यात्म में प्रवेश करते हैं।

जीव का अज्ञान है कि वह अपने को शरीर मानकर, आत्मा को गौण करता है। जब जीव को कोई ज्ञानी पुरुष का संग मिलता है तब उसे स्वरूप का बोध प्राप्त होता है। ज्ञानी पुरुष उन्हें स्व और पर का भेद करवाते हैं। जिसे भेद-विज्ञान कहते हैं। यह भेद विज्ञान ही मुक्ति का आधार है। इसी से जीव को सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होती है। सत्य का दर्शन प्राप्त होने पर जीव अपने स्वरूप पर श्रद्धा परिपक्व कर लेता है, जिसे हम क्षायिक समकित कहते हैं। व्यक्ति 24 मिनट तक अखण्ड शुक्ल ध्यान की आराधना करता है तो वह क्षायिक सम्यक्त्वी हो जाता है।

(शेष पृष्ठ 3 में)

अध्यक्षीय

सेवा, वात्सल्य और करुणा की प्रतिमूर्ति-पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म.सा.

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

इस संसार में समय अपनी गति से चलता रहता है, लेकिन कुछ संत ऐसे होते हैं जिनकी पावन स्मृतियाँ समय बीतने के साथ और भी गहरी व जीवंत हो जाती हैं। संघ गौरव, परम सेवाभावी, उप-प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी महाराज एक ऐसे ही महान संत थे। 6 अगस्त 1997 को उन्होंने भले ही अपनी भौतिक देह का त्याग कर दिया हो, लेकिन अपने सेवा-कार्यों, वात्सल्य और प्रेम भरे उपदेशों के रूप में वे आज भी हम सबके दिलों में बसते हैं।

सादा जीवन, सबसे बड़ा उपदेश : गुरुदेव की सबसे बड़ी विशेषता उनका बेहद सरल, शांत और सहज स्वभाव था। उनका जीवन ही उनका सबसे बड़ा उपदेश था। उन्होंने धर्म को केवल शास्त्रों के पन्नों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे आम इंसान के सुख-दुःख से जोड़ा। उनके मन में हर प्राणी के लिए एक पिता जैसी असीम करुणा थी। वे मानते थे कि एक सच्चा संत प्रकृति और बादलों की तरह होता है, जो बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग पर अपनी कृपा की बारिश करता है।

गुरुदेव को मिली 'परम सेवाभावी' की उपाधि केवल शब्दों का सम्मान नहीं था, बल्कि यह उनके पूरे जीवन का सच्चा सार था। उन्होंने हमें बहुत ही आसान शब्दों में सिखाया कि असहायों की मदद करना, बीमारों के लिए अस्पताल और औषधालय बनवाना, और समाज में शिक्षा का उजियारा फैलाना ही सच्ची प्रभु-भक्ति है।

विरासत के सच्चे संवाहक : उनके तीन सुयोग्य शिष्य-संघ रत्न उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म., श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री रमणीक मुनि जी म. और प्रज्ञा महर्षि शास्त्री श्री उपेन्द्र मुनि जी म., आज भी उसी प्रेम, पारस्परिक समन्वय और सेवा के मार्ग पर चलकर पूरे समाज का मंगल कर रहे हैं।

6 अगस्त 2026 गुरुदेव के 29वें पुण्य स्मरण दिवस पर मैं समाज के सभी श्रावक-श्राविकाओं से यही आत्मीय निवेदन करना चाहता हूँ कि गुरुदेव को केवल शब्दों या आयोजनों तक सीमित न रखें। हमारे समाज और देश को आपसी प्रेम, एकता और एक-दूसरे के दुःख-दर्द में साथ खड़े होने की बहुत जरूरत है। यदि हम अपने आसपास किसी जरूरतमंद की थोड़ी सी भी मदद कर सकें, किसी बीमार के दर्द को कम कर सकें या शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सहयोग दे सकें, तो यकीन मानिए, यही गुरुदेव के प्रति हमारी सबसे सच्ची श्रद्धा भक्ति होगी।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय नेतृत्व में बढ़ती जैन प्रतिभाएँ : समाज के लिए नई दिशा और नया संकल्प

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

गत् कुछ महीनो में राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जैन समाज की प्रतिभाओं को मिली शीर्ष जिम्मेदारियाँ एक अत्यंत शुभ संकेत हैं। वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्री रवि जैन को नीति आयोग का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त किया जाना, लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन का भारतीय थल सेना के उप थल सेनाध्यक्ष के रूप में दायित्व ग्रहण करना, दिल्ली निवासी श्री नरेंद्र जैन का दिल्ली राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त होना तथा न्यायमूर्ति अरुण भंसाली का इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज के मुख्य न्यायाधीश के रूप में सेवाएँ देना इस बात का प्रमाण है कि जैन समाज की प्रतिभाएँ आज राष्ट्र के सर्वोच्च संस्थानों में अपनी योग्यता, ईमानदारी और प्रशासनिक दक्षता का प्रभावशाली परिचय दे रही हैं।

यह सूची केवल कुछ नामों तक सीमित नहीं है। देशभर में अनेक जैन आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, न्यायिक अधिकारी, सैन्य अधिकारी और वैज्ञानिक विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। जनसंख्या की दृष्टि से अत्यंत छोटा होने के बावजूद जैन समाज ने शिक्षा, नैतिकता, अनुशासन और कर्मनिष्ठा के बल पर राष्ट्र निर्माण में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि पूरे समाज की बौद्धिक परंपरा और संस्कारों का प्रतिफल है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि इन सफलताओं को प्रेरणा बनाकर समाज सुनियोजित प्रयास करे। जीतो (JITO) सहित विभिन्न जैन संस्थाओं ने सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी और कैरियर मार्गदर्शन के क्षेत्र में सराहनीय पहल की है। यदि देश के प्रमुख नगरों में आईएएस, आईपीएस, न्यायिक सेवाओं और रक्षा सेवाओं की तैयारी के लिए समर्पित प्रशिक्षण केंद्र, छात्रवृत्ति योजनाएँ और मेंटरशिप कार्यक्रम विकसित किए जाएँ, तो आने वाले वर्षों में बड़ी संख्या में जैन युवक-युवतियाँ राष्ट्रीय सेवाओं में अपना स्थान बना सकते हैं। समाज को व्यापार और उद्योग के साथ-साथ प्रशासन, न्यायपालिका, सेना, शिक्षा, अनुसंधान और नीति-निर्माण में भी समान रूप से अग्रणी बनने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

वर्तमान चातुर्मास का समय भी आत्ममंथन का अवसर है। धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ समाज में शिक्षा, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्त्व, पांडुलिपि संरक्षण, पर्यावरण, संविधान, प्रशासनिक सेवाओं और राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों पर गंभीर संवाद आयोजित किए जाने चाहिए। केवल भव्य आयोजन और प्रदर्शन समाज का भविष्य नहीं बनाते, भविष्य बनता है ज्ञान, चरित्र, अनुशासन और योग्य नेतृत्व से। (शेष पृष्ठ 4 में)

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रवम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधार' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहिल्यानगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धारड़ा जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, बेजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कनावद जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर बीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांडु', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़वाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रवम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास वेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरुण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंद्राना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 71574
श्री वर्सल लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, छत्रपति संभाजीनगर	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री विलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय तारांचद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जींद	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंकची जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेश्वर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

आँख में एक आँख

एक दिन धर्मराज युधिष्ठिर को श्री कृष्ण ने आदेश दिया-धर्मराज, द्वारिका में कितने सज्जन और कितने दुर्जन रहते हैं, इसकी एक सूची बनाओ। मुझे निश्चित संख्या, नाम, पते के साथ लिख कर दो।

युधिष्ठिर ने कृष्ण की आज्ञा को मस्तक झुका कर स्वीकार कर लिया।

दुर्योधन को भी ठीक यही आदेश दिया। दोनों अपने-अपने काम में लग गये। एक दिन, दो दिन, इस तरह कई पक्ष व्यतीत हो गए। तब श्री कृष्ण ने धर्मराज और दुर्योधन को बुलवाया। दोनों उपस्थित हो गए। श्री कृष्ण ने दोनों से एक साथ कहा-तुम्हें मैंने एक काम करने को कहा था। अब तक अनेक पक्ष बीत गए। क्या द्वारिका की अब तक तुम परिक्रमा नहीं कर पाए? दिखाओ, अपना-अपना रजिस्टर तुमने कितने व्यक्तियों की सूची तैयार की है। दोनों ने अपने-अपने रजिस्टर श्री कृष्ण के सम्मुख रख दिये।

श्री कृष्ण ने देखा-युधिष्ठिर का रजिस्टर एकदम कोरा था। उसमें दुर्जनों की सूची में सिर्फ एक नाम लिखा था, युधिष्ठिर का अपना नाम!

कृष्ण ने युधिष्ठिर को उपालम्भ देते हुए कहा-धर्मराज! मैंने तुम्हें एक काम सौंपा था। आज तक तुमने उस दिशा में कुछ भी काम नहीं किया।

धर्मराज ने उत्तर दिया-महाराज! मैं पूरी द्वारिका छान चुका हूँ। मुझे एक भी दुर्जन दिखाई नहीं दिया। मैं सज्जनों की सूची कैसे तैयार करता? पूरी द्वारिका सज्जनों से अटी पड़ी है। जो कुछ उनके लिए आप करना चाहें, करें।

दुर्योधन का रजिस्टर देखा गया तो वह भी कोरा ही था। उसमें भी सिर्फ एक ही नाम अंकित था-सज्जनों की सूची में दुर्योधन! दुर्योधन से प्रश्न किया-तुमने भी मेरे आदेश का पालन नहीं किया?

दुर्योधन का उत्तर था-महाराज, द्वारिका का कोना-कोना छान मारा है। गली-गली और घर-घर को देख चुका हूँ। मुझे एक भी सज्जन नहीं मिला। अतः आप मेरे रजिस्टर को दुर्जनों के नामों से लिखा गया रजिस्टर समझें।

श्री कृष्ण मुस्कराए और बोले-दुर्योधन और युधिष्ठिर, दोनों समझ लो आंख कैसी होती है। चर्मचक्षु दोनों के पास हैं परंतु दोनों की आंख के भीतर रही हुई दूसरी आंख अलग-अलग प्रकार की है। एक के चर्मचक्षु के अंदर रही आंख संसार को दुर्जनों का अम्बार मानती है। एक की आंख है जिसमें सब सज्जन ही सज्जन दिखाई देते हैं। आंख में आंख का यही रहस्य है।

ख्याल रखो कि तुम किस तरफ देख रहे हो, क्योंकि जिनकी आंखें भटकती हैं, उनका मन भी भटकता है।

संघ सम्मान ही आत्म सम्मान

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

संघ शक्ति है, ऊर्जा है। अलग-अलग रहे तिनको से कचरा बनता है और एकत्रित तिनको से कचरा साफ होता है। सूरज की बिखरी किरणें मात्र उष्मा देती है और वे ही परावर्तन से केन्द्रित होने पर ऊर्जा बनती है। प्रत्येक इकाई में रहने वाली योग्यता एकत्रित होने पर पूर्णता से प्रकट होता है। पदार्थ की यही व्यवस्था साधक जगत में भी लागू होती है। संघ यह साधक वर्ग की क्षमताओं के प्रकटीकरण का पारंपरिक अधिष्ठान है। संघ की विशेषताओं को नंदीसूत्र में भिन्न-भिन्न उपमाओं के माध्यम से उल्लेखित किया गया है। युगों के भवन, आगमों के रत्न, श्रद्धा का राजमार्ग चारित्र के प्राचीर से सुशोभित, संघरूपी नगर है। संयम की धुनी, तप के आरे, सम्यक्त्व की परिधि युक्त अन्य चक्र से अपराजित संघ रूपी चक्र है। शील (सदाचार-ब्रह्मचर्य) रूपी पताका, तप व्रत-नियम रूपी अश्व से युक्त स्वाध्याय की सुमधुर ध्वनि से गुंजित, संघ रूपी रथ है। कर्म रूपी रज से उत्पन्न, भवजल प्रवाह से ऊपर उठे हुए, पाँच महाव्रत रूपी पराग, सत्ताईस गुणरूपी केसरयुक्त श्रावक-श्राविका रूप मधुकरों से घिरा, जिनेश्वर देव रूपी सूर्य से खिलने वाले श्रमण-श्रमणी रूप पत्रों से सुशोभित, पद्मकमल के समान संघ है।

संघ के महिमा वर्णन, गुण दर्शन का उद्देश्य है संघ की गरिमा का बोध होना। संघ का सम्मान जिनेश्वर देव का सम्मान है। तीर्थंकर परमात्मा का, अनंत सिद्धों का सम्मान है। जिन शासन प्रभावक महान आचार्य परम्परा का, श्रुतधर, बहुश्रुत, वाचना प्रमुख महापुरुषों का सम्मान है। संघ का सम्मान तीर्थंकर गणधरों द्वारा प्ररूपित आगम का, आज्ञा का सम्मान है। संघ के सम्मान से साधना में शुद्धता, दृढ़ता, पवित्रता, तेजस्विता वृद्धिंगत होती है। इसी मंगलमय भावना से हमारे पूर्वाचार्यों ने अगल-अलग सम्प्रदाय के रूप में विकीर्ण (बिखरी हुई) स्थानकवासी परम्परा के समान आचार विचारधारा की परम्पराओं को श्रमण संघ के रूप में एकत्रित किया। एक समाचारी एक आचार्य की व्यवस्था को स्वीकारने हेतु उदार-उदात्त भावना से अपने पद, वर्चस्व, अधिकार का विसर्जन किया। संगठन, सहयोग, सहभाग तथा सम्मान को सर्वोपरी मानकर नई व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की।

आज इसी दूरदृष्टि पूर्ण तथा त्यागपूर्ण बलिदान का यह फल हमारी आज की पीढ़ी को प्राप्त हो रहा है। उत्तर से दक्षिण तक हजारों क्षेत्रों में रहने वाले परिवार श्रमण संघ के उस गरिमामय परंपरा से जुड़े है। हमारे संघ के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है अपने उन गुरुदेवों के बलिदान का महत्व जानकार संघ की गरिमा, संघ के सम्मान को अक्षुण्ण रखने हेतु कटिबद्ध होने का, रहने का। श्रमण संघ से अलग रही तथा अलग हुयी दोनों की परम्पराए श्रमण संघ के उन महापुरुषों की दुहाई देकर आज श्रमण संघ के परम्परागत परिवारों को साम्प्रदायिक घेरे में जकड़ने के लिए प्रयासरत है। गुरु धारणा धार्मिक, सैद्धांतिक, तात्विक अध्ययन, ज्ञान-ध्यान आदि के माध्यम से वे गांवों-शहरों में अपनी परम्परा के स्थापना-विस्तार हेतु पूर्ण सामर्थ्य लगाए हुए है। छोटे-छोटे गांवों में जाना, वहाँ कुछ दिनों के लिए रूकना आदि ऐसे उपक्रम है जिनसे लोगों में उन सम्प्रदायों के प्रति विशेष अनुराग हो जाता है। परिणाम यह होता है कि उस क्षेत्र में अन्य सम्प्रदाय के साधु-साध्वी जी के लिए भी पहुँचना, रहना मुश्किल हो जाता है।

श्रमण संघ में सरलता का विशेष संस्कार है। इस कारण अनेकों बार सामान्य बातें भी दूसरे लोगों के लिए जनता में भ्रम फैलाने हेतु अधिक काम आती है। आज अनेकों नये साधक वर्ग द्वारा श्रमण संघ में प्राप्त स्वतंत्रता, स्वायत्त का दुरुपयोग होता दिखाई दे रहा है। हम अपनी मर्यादाओं का ध्यान स्वयं नही रखेंगे तो वे हमारे विषय में दुष्प्रचार, विषैल प्रचार में सहायक बनती है। हम कई बार अनजाने में अपनी आधुनिकता अथवा साहसिकता के आवेष में अकरणीय, अशोभनीय कार्य करते है। टेक्नालॉजी के इस युग में 'हम किसी से कम नहीं' यह मानसिकता साधक वर्ग में बढ़ती जा रही है, यह हमारे लिए धर्म प्रचार का कम अपप्रचार का अधिक कारण बन रही है। श्रद्धा की अभिवृद्धि की बजाय अश्रद्धा को पनपा रही है। किसी विशिष्ट व्यक्ति की भूलें पूरे संघ को प्रश्नचिन्ह के कटघरे में खड़ा कर रही है।

आज पूरे भारत वर्ष में जितनी जैन परंपरा है उन सभी के श्रमण संघ एक ऐसा संघ है जिसमें सर्वाधिक पी.एच.डी. के स्नातक है ऐसा कहा जाता है। आज हमारी इन प्रतिभाओं का सम्मान, उपयोग श्रमण संघ की गरिमा, अभिवृद्धि में होना चाहिए। ज्ञानी-त्यागी-तपस्वी प्रतिभाशाली अनेक विविध शक्तियाँ श्रमण संघ में हैं। उनकी क्षमता की प्रस्तुति सही तरीके से हो। संघ का गौरवशाली इतिहास लक्ष्य में लेकर वर्तमान में क्षुद्र बातों को छोड़ हम अपनी क्षमताओं का उपयोग संघ विकास, संघ के उज्जवल भविष्य के लिए करें यह हमारा लक्ष्य बनें। हमारे संघ की समस्त प्रतिभाओं से, नई ऊर्जाओं से हार्दिक विनम्र आग्रह है कि सोशल मीडिया के मोह को छोड़ प्रत्यक्ष में उपलब्ध अवसरों को अधिक महत्व दें। संघ का सम्मान हम सभी का सम्मान है। संघ के सम्मान को आघात न पहुँचे इसका हम ध्यान रखें तथा संघ के किसी भी सदस्य को कोई आँच न आए इस हेतु जागृत रहें।

(पृष्ठ 1 का शेष 'शिव संदेश') ऐसा जीव कर्म सिद्धान्त को मानकर, कार्य-कारण सम्बन्ध को समझता हुआ हर परिस्थिति को स्वीकार लेता है। वह लेकिन, किन्तु, परन्तु आदि के चक्रव्यूह में पड़कर आर्त्त-रौद्र ध्यान नहीं करता, वह प्रतिक्रिया नहीं करता। हर अवस्था में वह समभाव की आराधना करते हुए राग-द्वेष से मुक्त होकर त्याग, वैराग्य के द्वारा वीतरागता की ओर बढ़ता है।

अनेकान्तवाद - आत्म-दर्शन, सम्यक् दर्शन प्राप्त जीव भेद विज्ञान, कर्म सिद्धांत के साथ अनेकान्तवाद के सिद्धान्त को स्वीकार कर वह किसी भी निमित्त से विभाव में नहीं जाता। किसी की वृत्ति को महत्त्व नहीं देता, अभेद दृष्टि से सभी में जीव के दर्शन करता है। वर्ष 2026 का चातुर्मास प्रारंभ होने जा रहा है हम अपनी परतंत्रता का त्याग कर पर तत्त्व के प्रति परतंत्रता से मुक्त होकर स्व, तंत्र अर्थात् आत्मा के तन्त्र को समझकर आत्म रमण करेंगे तो श्रमण संघ का अमृत महोत्सव मनाना सफल होगा व देश की स्वतंत्रता के पर्व को भी मनाना सार्थक होगा।

इस चातुर्मास में संकल्प करें : **1.** मैं किसी भी क्रिया में अपने मोह कर्म का पोषण नहीं करूंगा, पिण्ड को पराया मानकर इसके मोह को क्षय करने का पुरुषार्थ करूंगा। **2.** प्रत्येक देहधारी के आकार को महत्त्व न देकर, अभेद दृष्टि से उसमें आत्मा के दर्शन कर अपने सम्यक्त्व का पोषण करूंगा। **3.** निश्चय धर्म (ज्ञाता-दृष्टा भाव) को जीवन में आत्मसात करूंगा व उसी व्यवहार को महत्त्व दूंगा जो मेरे निश्चय धर्म में सहयोगी होगा। **4.** स्वभाव व विभाव के भेद को समझकर प्रति पल अपने जीव का होश बनाए रखूंगा। होश अर्थात् आत्म रमण, बेहोशी अर्थात् पुद्गल का चिंतन। **5.** मैं पुद्गल के चिन्तन का त्याग करूंगा। मेरा प्रत्येक समय सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र व तप के मार्ग पर अग्रसर होगा, ऐसे संकल्प के साथ आपका चातुर्मास सफल हो।

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 27

श्वास और तंत्रिका तंत्र

(गहन विस्तार)

पिछले अध्याय में हमने समझा कि श्वास वर्तमान का द्वार है। अब हम और गहराई से देखेंगे-श्वास केवल ध्यान का साधन नहीं, बल्कि तंत्रिका तंत्र (Nervous System) को संतुलित करने की सीधी कुंजी है। यदि प्रमाद को जैविक स्तर पर समझना है, तो श्वास को वैज्ञानिक और अनुभवात्मक दोनों दृष्टि से समझना आवश्यक है।

1. श्वास-स्वैच्छिक और अनैच्छिक के बीच सेतु : हमारे शरीर की अधिकांश क्रियाएँ स्वचालित हैं-हृदय की धड़कन, पाचन, हार्मोन स्राव। पर श्वास अद्‌भुत है। वह स्वतः भी चलती है और हम उसे सचेत रूप से बदल भी सकते हैं। यही कारण है कि श्वास तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने का सीधा माध्यम है।

2. उथली बनाम गहरी श्वास : उथली श्वास Sympathetic तंत्र को सक्रिय रखती है। यह सतर्कता, तनाव और fight-or-flight को बढ़ाती है। गहरी, धीमी, पेट तक जाने वाली श्वास Parasympathetic तंत्र को सक्रिय करती है। यह विश्राम, पुनर्स्थापन और संतुलन को बढ़ाती है। इस प्रकार श्वास केवल हवा नहीं-तंत्रिका संकेत है।

3. श्वास की लय और मन की लय : तेज श्वास-तेज विचार, धीमी श्वास-शांत विचार, यदि श्वास असमान है, तो मन भी अस्थिर होगा। यदि श्वास लयबद्ध है, तो मन में स्थिरता आएगी। मन को सीधे नियंत्रित करना कठिन है। पर श्वास को संतुलित करना संभव है।

4. लंबा श्वास-त्याग (Exhalation) : श्वास छोड़ना (Exhalation) विशेष रूप से Parasympathetic तंत्र को सक्रिय करता है। यदि आप धीरे-धीरे लंबा श्वास छोड़ें, तो शरीर को संकेत मिलता है-"सुरक्षित हो।" यह साधारण अभ्यास तनाव की तीव्रता तुरंत कम कर सकता है।

5. श्वास और भावनात्मक संतुलन : जब भाव तीव्र हों, तो श्वास असमान हो जाती है। यदि उसी क्षण व्यक्ति श्वास पर लौट आए, तो भाव का प्रभाव कम हो सकता है। यह दमन नहीं है। यह संतुलन है।

6. नाभि-श्वास का महत्व : जब श्वास केवल छाती तक सीमित रहती है, तो शरीर सतर्क अवस्था में रहता है। जब श्वास नाभि तक जाती है, तो ऊर्जा नीचे स्थिर होती है। नाभि-श्वास अस्तित्व-भय को नरम करती है।

7. नियमित अभ्यास का प्रभाव : यदि व्यक्ति दिन में कई बार 5–10 मिनट गहरी श्वास का अभ्यास करे, तो Nervous System धीरे-धीरे पुनर्संतुलित हो सकता है। यह तुरंत चमत्कार नहीं करता, पर धीरे-धीरे आधार बदल देता है।

8. सजगता + श्वास : केवल यांत्रिक श्वास-प्रश्वास पर्याप्त नहीं है। यदि श्वास के साथ सजगता जुड़ी हो-अवलोकन, स्वीकार, नरमी-तो उसका प्रभाव गहरा होता है। श्वास शरीर को संतुलित करती है। सजगता मन को। दोनों साथ हों, तो प्रमाद की जड़ें कमजोर होती हैं।

9. अभ्यास-एक सरल विधि : दिन में तीन बार रुकें। 4 गिनती में श्वास लें। 6 गिनती में धीरे-धीरे छोड़ें। ध्यान पेट पर रखें। 5 मिनट पर्याप्त हैं। यह अभ्यास शरीर को सुरक्षित अनुभव कराता है।

10. अंतिम स्पष्टता : श्वास और तंत्रिका तंत्र का संबंध प्रमाद से मुक्ति का व्यावहारिक आधार है। जब श्वास संतुलित है, तो मन संतुलित है। जब मन संतुलित है, तो प्रतिक्रिया कम है। जब प्रतिक्रिया कम है, तो प्रमाद ढीला पड़ता है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-गहरी श्वास भय को कैसे पिघलाती है।

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

आधुनिक जैन अध्ययन के वैश्विक पुरोधा : प्रो. पॉल डंडास

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

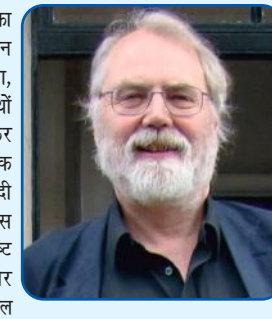

जैन दर्शन के वैश्विक अध्ययन का इतिहास उन विदेशी विद्वानों के योगदान के बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता, जिन्होंने भारतीय भाषाओं, प्राचीन ग्रंथों और जैन परम्परा का गहन अध्ययन कर उसे अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक जगत तक पहुँचाया। बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी के ऐसे अग्रणी विद्वानों में प्रो. पॉल डंडास (1952–2023) का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने अपने शोध, अध्यापन और लेखन के माध्यम से जैन धर्म को केवल एक भारतीय धार्मिक परम्परा के रूप में नहीं, बल्कि एक समृद्ध दार्शनिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक परम्परा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

स्कॉटलैंड में जन्मे प्रो. पॉल डंडास ने प्रारम्भ से ही भारतीय भाषाओं और प्राच्य अध्ययन के प्रति विशेष रुचि विकसित की। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं पर उनकी असाधारण पकड़ ने उन्हें जैन साहित्य के मूल स्रोतों तक पहुँचने की क्षमता प्रदान की। वे उन विरले पाश्चात्य विद्वानों में थे, जिन्होंने जैन आगमों तथा मध्यकालीन जैन ग्रंथों का अध्ययन अनुवादों के माध्यम से नहीं, बल्कि उनकी मूल भाषाओं में किया। यही कारण है कि उनके निष्कर्षों में प्रामाणिकता, गहराई और पाठालोचनात्मक दृष्टि का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।

प्रो. डंडास ने लंबे समय तक स्कॉटलैंड के प्रतिष्ठित एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन विभाग में अध्यापन किया। वहाँ उन्होंने जैन अध्ययन को अकादमिक विमर्श का महत्वपूर्ण विषय बनाया तथा अनेक शोधार्थियों को भारतीय दर्शन और विशेषतः जैन धर्म के गंभीर अध्ययन के लिए प्रेरित किया। उनके मार्गदर्शन में तैयार हुए अनेक शोध आज विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

जैन अध्ययन के क्षेत्र में उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति 'The Jains' है। यह ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में जैन धर्म पर उपलब्ध सबसे प्रामाणिक और व्यापक अध्ययनों में सम्मिलित किया जाता है। इस पुस्तक में उन्होंने जैन धर्म की ऐतिहासिक विकास-यात्रा, तीर्थंकर परम्परा, दार्शनिक सिद्धांतों, आगमिक साहित्य, दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्पराओं, मठ-संस्थाओं, आचार-विचार तथा समकालीन जैन समाज का संतुलित और शोधपरक विवेचन प्रस्तुत किया है। आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में जैन अध्ययन के पाठ्यक्रम में यह ग्रंथ एक मानक संदर्भ पुस्तक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

प्रो. डंडास का शोध केवल सामान्य परिचयात्मक अध्ययन तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने जैन आचार्य हेमचंद्र के साहित्य, विशेषकर 'त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का गंभीर विश्लेषण किया। उनकी शोध-दृष्टि का उद्देश्य केवल ग्रंथों का भाषिक अध्ययन नहीं था, बल्कि उनके दार्शनिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों को भी समझना था। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि जैन साहित्य भारतीय बौद्धिक परम्परा का अभिन्न अंग है और उसका अध्ययन भारतीय इतिहास तथा दर्शन की समग्र समझ के लिए अनिवार्य है।

उनकी विद्वत्ता का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि वे जैन धर्म को किसी सीमित धार्मिक पहचान में बाँधकर नहीं देखते थे। उनके अनुसार जैन दर्शन का मूल स्वरूप अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह और आत्मानुशासन जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है, जिनकी प्रासंगिकता आधुनिक विश्व में पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। वे मानते थे कि जैन चिंतन केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की मानवीय सभ्यता के लिए भी एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है।

प्रो. पॉल डंडास ने अपने दीर्घ अकादमिक जीवन में अनेक शोध-पत्रों, व्याख्यानों और पुस्तकों के माध्यम से जैन धर्म के संबंध में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का निराकरण किया तथा पश्चिमी जगत में जैन अध्ययन को एक स्वतंत्र और गंभीर अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यों ने भारतीय और विदेशी विद्वानों के बीच संवाद का एक नया सेतु निर्मित किया।

वर्ष 2023 में उनके निधन के साथ जैन अध्ययन की अंतर्राष्ट्रीय दुनिया ने एक मनीषी विद्वान को खो दिया, किन्तु उनकी बौद्धिक विरासत आज भी जीवित है। उनके ग्रंथ, शोध और व्याख्यान विश्वभर के विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा जैन अध्ययन केन्द्रों में समान रूप से सम्मान के साथ पढ़े और उद्धृत किए जाते हैं।

जैन दर्शन के विदेशी विद्वानों की परम्परा में प्रो. पॉल डंडास का नाम इसलिए विशेष महत्त्व रखता है कि उन्होंने निष्पक्ष अकादमिक दृष्टि, मूल स्रोतों के गहन अध्ययन और वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति के माध्यम से जैन धर्म को वैश्विक बौद्धिक समुदाय के समक्ष एक सुदृढ़ दार्शनिक परम्परा के रूप में स्थापित किया। उनका संपूर्ण कृतित्व इस तथ्य का प्रमाण है कि ज्ञान की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होतीय सत्य की खोज ही एक सच्चे विद्वान की वास्तविक पहचान है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') जैन दर्शन का मूल संदेश है-अहिंसा, अनेकांत, सत्य, संयम और उत्तरदायित्व। यही मूल्य एक उत्कृष्ट प्रशासक, न्यायाधीश, सैनिक और लोकसेवक की भी पहचान हैं। इसलिए जब जैन समाज के युवा इन क्षेत्रों में आगे बढ़ते हैं, तब वे केवल व्यक्तिगत उपलब्धि प्राप्त नहीं करते, बल्कि जैन दर्शन के जीवन-मूल्यों को राष्ट्रीय जीवन में प्रतिष्ठित भी करते हैं।

आज आवश्यकता उत्सव से अधिक संकल्प की है। जिन प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है, वे समाज के लिए आदर्श हैं, अब लक्ष्य यह होना चाहिए कि प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में जैन युवक-युवतियाँ सिविल सेवाओं, न्यायपालिका, सेना और अन्य राष्ट्रीय संस्थानों में चयनित हों। यही जैन समाज की ज्ञान-परंपरा का विस्तार होगा, यही राष्ट्रसेवा होगी और यही आने वाले भारत में जैन समाज की सबसे बड़ी पहचान बनेगी।

M.J. Home Furnishing

Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric

Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal

Mob: 8053018933, 8727890101

E-mail: mjhome025@gmail.com

Vijay Jain

National Chairman - Jain Conference, New Delhi

जैन समाज के ऐतिहासिक अल्प ज्ञात तथ्य श्रृंखला...

अन्नासाहेब लट्ठे और राजर्षि छत्रपति शाहू जी महाराज : सामाजिक न्याय, जैन चेतना और प्रगतिशील नेतृत्व की प्रेरक गाथा

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

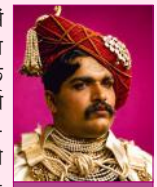
छत्रपति शाहू जी महाराज

अन्नासाहेब लट्ठे जैन

भारतीय सामाजिक पुनर्जागरण के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनकी भूमिका केवल प्रशासन या राजनीति तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने समाज की दिशा और दशा बदलने का कार्य किया। राजर्षि छत्रपति शाहू जी महाराज (1874-1922) और उनके विश्वासपात्र सहयोगी अन्नासाहेब बाबाजी लट्ठे जैन (9 दिसंबर 1878 - 16 मई 1950) ऐसी ही ऐतिहासिक जोड़ी थे।

एक ओर शाहू जी महाराज सामाजिक न्याय, शिक्षा और समानता के प्रखर प्रवर्तक थे, तो दूसरी ओर अन्नासाहेब लट्ठे जैन उनके विचारों को व्यवहार में उतारने वाले कुशल प्रशासक, शिक्षाविद्, समाज-सुधारक और जैन समाज के प्रमुख नेता थे।

अन्नासाहेब लट्ठे जैन का जीवन परिचय : अन्नासाहेब बाबाजी लट्ठे जैन का जन्म 9 दिसंबर 1878 को तत्कालीन बंबई प्रांत के कुरुंदवाड़ (वर्तमान महाराष्ट्र) में एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा कुरुंदवाड़ और मिरज में प्राप्त करने के बाद उन्होंने कोल्हापुर के राजाराम कॉलेज तथा पुणे के डेक्कन कॉलेज से उच्च शिक्षा ग्रहण की। अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने अध्यापन, शिक्षा प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में उल्लेखनीय योगदान दिया।

लट्ठे सत्यशोधक आंदोलन, गैर-ब्राह्मण आंदोलन और सामाजिक सुधार अभियानों के प्रमुख नेताओं में रहे। वे कोल्हापुर रियासत के दीवान (प्रधान प्रशासक) बने और बाद में तत्कालीन बंबई प्रांत के प्रथम वित्तमंत्री के रूप में भी कार्य किया। उनका निधन 16 मई 1950 को हुआ।

जैन समाज से गहरा जुड़ाव : अन्नासाहेब लट्ठे जैन का व्यक्तित्व जैन संस्कृति और आधुनिक सामाजिक चेतना का अद्भुत संगम था। वे दक्षिण भारत जैन सभा के प्रारम्भिक निर्माताओं में रहे और उसके नाम के सुझाव का श्रेय भी उन्हें दिया जाता है। उन्होंने "जैन धर्म का परिचय" (1905) जैसे ग्रंथ की रचना की तथा जैन समाज में शिक्षा, संगठन और सामाजिक जागरण को नई दिशा प्रदान की। उनके जीवन में जैन धर्म के अहिंसा, समता, आत्मानुशासन और लोककल्याण के आदर्श स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

शाहू जी महाराज और अन्नासाहेब लट्ठे जैन का ऐतिहासिक संबंध : राजर्षि छत्रपति शाहू जी महाराज केवल कोल्हापुर के शासक नहीं थे, बल्कि आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय और समान अवसर के अग्रदूतों में गिने जाते हैं। उन्होंने शिक्षा का व्यापक प्रसार किया, पिछड़े और वंचित वर्गों के लिए आरक्षण जैसी ऐतिहासिक नीतियाँ लागू की तथा जातिगत भेदभाव के विरुद्ध निर्णायक कदम उठाए।

इन सभी कार्यों में अन्नासाहेब लट्ठे जैन उनके सबसे विश्वसनीय सहयोगियों में थे। दोनों के बीच संबंध केवल राजा और दीवान का नहीं था, बल्कि समान विचारधारा, परस्पर विश्वास और सामाजिक परिवर्तन के साझा संकल्प का था। प्रशासनिक दक्षता, नीति-निर्माण और सुधारों के क्रियान्वयन में लट्ठे की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। शाहू जी महाराज के निधन (1922) के बाद उन्होंने उनके जीवन और कार्यों पर पहला प्रामाणिक चरित्र-ग्रंथ लिखा, जो आज भी इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

बहुजन और जैन समाज के लिए गौरव : अन्नासाहेब लट्ठे जैन का जीवन इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि जैन समाज का योगदान केवल व्यापार और धर्म तक सीमित नहीं रहा, बल्कि शिक्षा, सामाजिक सुधार, प्रशासन और राष्ट्र-निर्माण में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बहुजन समाज उन्हें सामाजिक न्याय के सशक्त समर्थक के रूप में स्मरण करता है, जबकि जैन समाज उन्हें अपने ऐसे गौरवशाली नेता के रूप में देखता है, जिन्होंने जैन मूल्यों को लोकसेवा और सुशासन के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

आज आवश्यकता है कि अन्नासाहेब लट्ठे जैन जैसे महापुरुषों के जीवन और कार्यों का पुनर्पाठ किया जाए। वे इस सत्य के जीवंत प्रमाण हैं कि जब नैतिकता, शिक्षा, प्रशासनिक क्षमता और सामाजिक समर्पण एक साथ आते हैं, तब इतिहास में स्थायी परिवर्तन संभव होता है। जैन समाज और बहुजन समाज-दोनों के लिए उनका जीवन प्रेरणा, समन्वय और सेवा का उज्ज्वल आदर्श है।

जो गिरेगा, वही उठेगा

- अरुण कुमार जैन, इन्दौर

एक जमाना था हमारे बुजुर्गों का, जब कहा जाता था-"जो उठेगा, वही गिरेगा।" यह प्रकृति का नियम माना जाता था। एक पीढ़ी संघर्ष करके ऊँचाई प्राप्त करती थी, दूसरी पीढ़ी उसी ऊँचाई को आधार बनाकर उससे भी आगे बढ़ने का प्रयास करती थी। साथ ही यह भी ध्यान रखती थी कि हाथ-पाँव सलामत रहें और जिस ऊँचाई तक पहुँचे हैं, उससे नीचे न आ जाएँ। अर्थात चौबे से छब्बे बनने के प्रयास में दुबे न बन जाएँ।

पहली पीढ़ी ने संघर्ष देखा था, इसलिए उसे सफलता का मूल्य मालूम था। दूसरी पीढ़ी ने उस संघर्ष का फल पाया और आगे बढ़ी। जब तीसरी पीढ़ी आती है तो वह स्वयं को पहले से ही शिखर पर बैठा हुआ पाती है। उसे पहली पीढ़ी के संघर्ष का कोई अनुभव नहीं होता। उसे केवल ऊँचाई दिखाई देती है और वह और ऊँची उड़ान भरने का सपना देखने लगती है। आत्मविश्वास धीरे-धीरे अति-आत्मविश्वास में बदल जाता है। नीचे की जमीन घुँधली पड़ जाती है और उसे लगता है कि अब गिरना संभव ही नहीं। यहीं से चौथी पीढ़ी में गिरावट शुरू होती है। पाँचवीं पीढ़ी अकर्मण्यता की शिकार हो जाती है और उसे फिर जमीन पर लौटना पड़ता है। छठी पीढ़ी दोबारा संघर्ष करती है, क्योंकि जीवंत समाज कभी स्थायी पराजय स्वीकार नहीं करते, वे अपना रास्ता स्वयं बना लेते हैं।

आज का नया नारा है-"जो गिरेगा, वही उठेगा।" पहले गिरना आवश्यक है। आदमी जितना चाहे गिर जाए, शर्म और संकोच के सारे पर्दे फट जाएँ, तब भी उसे कोई पछतावा नहीं। बल्कि ऐसा लगता है कि यदि आप नहीं गिरे, तो समाज आपको संदेह की दृष्टि से देखेगा-"अरे, अभी तक नहीं गिरे? कैसे पिछड़े हुए आदमी हैं।"

अब जड़ नहीं चलते, जड़बुद्धि चलती है। यही राष्ट्रीय ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय फैशन बन गया है। यदि विकसित होना है तो जड़बुद्धि होना पड़ेगा। बुद्धिमान व्यक्ति हर बात का विश्लेषण करता है, तर्क-वितर्क करता है, सोचता है, पर निर्णय लेने में देर कर देता है। दूसरी ओर, जड़बुद्धि व्यक्ति बिना सोचे आगे बढ़ जाता है और कई बार वही सफल घोषित कर दिया जाता है। जरा अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य देखिए। गिरे, पर घुटनों पर नहीं आया। अड़े रहे और भी झेलते रहे, मगर झुके नहीं। अब लगता है की बारी है। वह शायद पहले से ही नकली घुटनों की व्यवस्था कर रहा होगा। आखिर हर ऊँट को कभी न कभी पहाड़ के नीचे आना ही पड़ता है। लेकिन यह नया युग है-अब ऊँट पहाड़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी भी साथ लेकर चलता है।

गिरने की सीमाएँ लगातार टूट रही हैं। लोग अब से भी ऊँची जगह खोज रहे हैं, ताकि वहाँ से गिरकर नया विश्व रिकॉर्ड बना सकें। आखिर गिरने का कोई रिकॉर्ड भी तो बनना चाहिए। आइए, हम सब मिलकर गिरावट का नया विश्व रिकॉर्ड अपने नाम करें। समाज में हर ओर गिरावट दिखाई देती है-रिश्तों में, दोस्ती में, व्यापार में, व्यवहार में, प्रशासन में, शासन में, नैतिकता में और निजता में। ऐसा कौन-सा क्षेत्र बचा है जहाँ गिरावट ने दस्तक न दी हो?

हमारे नेता और अभिनेता भी इस दौड़ में पीछे नहीं हैं। कुछ बड़े उद्योगपति अपने कारनामों के बाद देश छोड़कर विदेशों तक पहुँच गए और वहाँ भी अपनी गिरावट का डंका बजा रहे हैं। मानो बता रहे हों कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र अब से भी तेजी से गिर सकता है। कहते हैं, हर रात के बाद सवेरा होता है। इसलिए शायद आज का नया दर्शन यही है-गिरेंगे और गिरेंगे जितना अधिक गिरेंगे, उतना ही उठेंगे।

कविता का कोना

जैन प्रकाश

ज्ञान-ध्यान की पावन धारा, सदा बहाती जैन प्रकाश।
नित्य नया ऋषि-मुनियों का, ज्ञान सुनाती जैन प्रकाश।
ऋषि-मुनियों का समाचार, हमें सुनाती जैन प्रकाश।
कब और कहाँ गुरुदेव पधारे, हमें बताती जैन प्रकाश।
आगामी पर्वों की जानकारी, हम तक पहुँचाती जैन प्रकाश।
श्रमण संघ के अद्भुत संगम में, हमें नहलाती जैन प्रकाश।
कितनी महिमा इसकी गायें, जैन सूर्य है जैन प्रकाश।
व्यस्त संघर्ष भरे जीवन में, शांति देती जैन प्रकाश।
आगम-प्रवचन का सार सदा ही, हमें सुनाती जैन प्रकाश।
गुरुवर का संदेश सुनाने, घर-घर जाती जैन प्रकाश।
हर हफ्ते हम आस लगायें, कब आयेगी जैन प्रकाश।
सदा मधुर और पावन गाथा, हमें सुनाती जैन प्रकाश।
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस से, प्रकाशित होती जैन प्रकाश।
पूरे देश में विचरण करके, ज्ञान पहुँचाती जैन प्रकाश।
देश के कोने-कोने को, जगमग करती जैन प्रकाश।

- हरी नारायण गर्ग

श्रमण संघीय जैन पर्व

01 अगस्त : प्रवर्तिनी श्री सुधा जी म.-जन्म दिवस
06 अगस्त : परम सेवाभावी श्री प्रेमसुख जी म.-स्मृति दिवस
07 अगस्त : मालवकेसरी श्री सौभाग्यमल जी म.-स्मृति दिवस
12 अगस्त : प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि जी म.-जन्म दिवस
13 अगस्त : आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी म.-जन्म दिवस
20 अगस्त : प्रवर्तक श्री रूपमुनि जी म.-स्मृति दिवस
22 अगस्त : प्रवर्तक श्री रूपमुनि जी म.-जन्म दिवस
27 अगस्त : मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.-जन्म दिवस
28 अगस्त : पंजाब केसरी उपाध्याय श्री प्रेमचंद जी म.-जन्म दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

11 अगस्त : ओसवाल वंश स्थापना दिवस
12 अगस्त : डॉ. विक्रम साराभाई जैन जन्म दिवस
12 अगस्त : हरियाली तीज
15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस
25 अगस्त : श्री वीरचन्द राघवजी गांधी जन्म दिवस
28 अगस्त : रक्षाबंधन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म. आदि ठाणा-10 का आध्यात्मिक चातुर्मासिक मंगल प्रवेश सम्पन्न

सूरत (गुजरात) : 23 जुलाई 2026 को आत्म भवन, बलेश्वर, सूरत में आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव ध्यान गुरु आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने अपनी शिष्य मण्डली के साथ प्रातः काल बंगला नं. 114-115 से सन् 2026 के चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हेतु प्रस्थान किया। श्रीसंघ की महिलाओं ने सिर पर मंगल कलश धारण किये हुए थे, पुरुषों के हाथ में भगवान महावीर के जयकारों एवं जैन धर्म के ध्वज लहरा रहे थे। पचरंगी पगड़ी पहने हुए सभी शोभायात्रा में शोभायमान हो रहे थे। जयकारों के साथ प्रातः 9:30 बजे आचार्य भगवंत ने आत्म भवन में मंगल प्रवेश किया।

इस मंगल प्रवेश पर आचार्य भगवन् ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आप सभी ने चातुर्मास प्रवेश पर हमारा स्वागत किया, हम भी आप सभी का स्वागत करते हैं। स्वागत का संधिविच्छेद करें तो इसका अर्थ इस प्रकार होता है स्व+आगत यानि अपनी आत्मा में आओ। जब हम अपनी आत्मा में स्थित हो जाएंगे तो अपने आप ही सभी का स्वागत हो जाएगा। साथ ही आचार्य भगवन् ने सभी को आत्म-ध्यान की प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्म-ध्यान से ही आत्मा का कल्याण होगा। आचार्य भगवन् ने इस अवसर पर सभी साधु-साध्वियों की सेवा, साधना एवं जिनवाणी का लाभ लेने हेतु सभी को प्रेरित किया।

प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म. ने अपने उद्बोधन में आत्मा की ओर अभिमुख होने की प्रेरणा प्रदान की। इससे पूर्व श्री शुभम मुनि जी म. 'आत्मज्ञानी भगवान आत्म-भवन में आए करने आत्म-साधना' भजन की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक मेहता जैन ने किया। चातुर्मास प्रवेश पर स्थानीय संघों के अलावा अनेकों राज्यों के श्रद्धालु भी विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रेषक : तुलसी चपलोत

वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पू. श्री विशालमुनि जी म. का पश्चिम विहार दिल्ली में भव्य चातुर्मास प्रवेश

पश्चिम, दिल्ली : श्रमण संघीय सलाहकार, राजर्षि तपस्वी रत्न पूज्य गुरुदेव श्री सुमति प्रकाश जी महाराज साहब के सुशिष्य, श्रमण संघीय वरिष्ठ उपाध्याय, वाचनाचार्य प्रवर पू. डॉ. श्री विशाल मुनि जी महाराज एवं नवकार साधक पंडित रत्न श्री विचक्षण मुनि जी महाराज आदि ठाणा आठ का सुमति-मय चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश तीर्थंकर भगवंतो एवं गुरु भगवंतों के जयघोष के मध्य पश्चिम विहार जैन स्थानक दिल्ली में अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से मंगलकामनाएँ प्रकट करते हुए दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन तथा राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों सहित दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब प्रांतों से पधारे सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर पूज्य गुरुदेवों के प्रति अपनी श्रद्धा, भक्ति एवं मंगलभावनाएँ अर्पित कीं। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनि जी म. आदि ठाणा का पाली में भव्य चातुर्मास प्रवेश

पाली (राजस्थान) : 22 जुलाई को आचार्य श्री रघुनाथमल जी महाराज एवं गुरुदेव मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज की पुण्य जन्मस्थली पाली बुधवार को उस समय धर्ममय वातावरण में सराबोर हो गई, जब उनकी गौरवशाली शिष्य परम्परा का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के अभूतपूर्व वातावरण में संपन्न हुआ। आचार्य श्री रघुनाथ स्मृति जैन भवन पहुँचने पर मंगल प्रवेश शोभायात्रा एक विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान शांतिनाथ एवं गुरुदेव मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज की स्तुति से हुआ।

इसके पश्चात् धर्मसभा को संबोधित करते हुए मरुधरा भूषण, शासन गौरव, संत शिरोमणि प्रवर्तक पूज्य श्री सुकनमल जी महाराज एवं तपस्वीरत्न, ज्योतिष सम्राट, उपप्रवर्तक पूज्य श्री अमृतमुनि जी महाराज ने चातुर्मास के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चातुर्मास आत्मशुद्धि, संयम, तप, स्वाध्याय और आत्मकल्याण का अनुपम अवसर है। उन्होंने श्रद्धालुओं से चार माह के इस पुण्यकाल का अधिकाधिक सदुपयोग करते हुए धर्माराधना, साधना, सेवा और संस्कारों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया।

भव्य मंगल प्रवेश शोभायात्रा में पाली शहर विधायक भीमराज भाटी एवं पूर्व सभापति महेंद्र बोहरा ने भी सहभागी बनकर गुरु भगवंतों की अगुवाई की। दोनों जन प्रतिनिधियों ने संत मंडल का विनम्र भाव से स्वागत एवं वंदन कर चातुर्मास की ऐतिहासिक सफलता के लिए मंगलकामनाएं व्यक्त की। प्रेषक : प्रकाश कटारिया जैन

उदयपुर देवेन्द्र धाम में उपाध्यायश्री जी एवं प्रवर्तकश्री जी का चातुर्मास प्रवेश

उदयपुर (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में देवेंद्र धाम में चातुर्मास मंगल प्रवेश समारोह श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। उपाध्याय पूज्य डॉ. रमेशमुनि महाराज, प्रवर्तक पूज्य डॉ. राजेंद्रमुनि महाराज, पूज्य डॉ. सुरेंद्रमुनि महाराज एवं पू. श्री दीपेशमुनि महाराज का भव्य शोभायात्रा के साथ देवेंद्रधाम में मंगल प्रवेश हुआ। भगवान महावीर के जयघोष, भक्ति गीतों और मंगल ध्वनियों से पूरा वातावरण धर्ममय हो उठा। सैकड़ों श्रद्धालु ध्वज-बैनर एवं मंगल कलश के साथ शोभायात्रा में शामिल हुए।

देवेंद्रधाम पहुंचने पर संत भगवंतों का भव्य अभिनंदन हुआ तथा नव-निर्मित श्री महावीर समवसरण में धर्मसभा का शुभारंभ मंगलाचरण और स्तवन के साथ हुआ। धर्मसभा में उपाध्याय पूज्य डॉ. रमेशमुनि महाराज ने कहा कि क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषायों पर विजय प्राप्त कर ही व्यक्ति आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। प्रवर्तक डॉ. राजेंद्र मुनि महाराज ने कहा कि चातुर्मास आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और आध्यात्मिक जागरण का महापर्व है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुरेंद्रमुनि महाराज ने किया। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक श्री प्रशांत जैन 'गांधरा' सहित अन्य अतिथियों ने चातुर्मास प्रवेश में शामिल होकर संतों के श्रीचरणों में वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म., उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म., अहिल्यानगर

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूटस

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

देशभर में श्रमण संघीय पूज्य साधु-साध्वीवृंद के वर्ष 2026 के चातुर्मास प्रवेश की झलकियाँ

उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म., पीतमपुरा, दिल्ली

उपप्रवर्तक पू. श्री सत्यप्रकाश जी म., मंडी डबवाली (पंजाब)

सलाहकार पू. श्री रमणीकमुनि जी म. आदि ठाणा, पुणे (महाराष्ट्र)

आनंदशिष्य रत्न पू. श्री प्रशांतऋषि जी म., राजगुरुनगर-पुणे

पू. डॉ.समकित मुनि जी म. आदि ठाणा, बैंगलोर (कर्नाटक)

युवा तपस्वी पू. श्री मुकेश जी म. आदि ठाणा, खैरताबाद (तेलंगाना)

राजस्थान प्रवर्तिनी पू. डॉ. सुप्रभा जी म., अहमदाबाद (गुजरात)

पू. श्री विपुलदर्शनाजी म. आदि ठाणा, नासिक रोड (महाराष्ट्र)

महासाध्वी पू. श्री श्रीवृष्टि जी म., रानियां (हरियाणा)

उप-प्रवर्तिनी पू. श्री मंगलप्रभा जी म. आदि ठाणा, मालेगांव

साध्वी पू. श्री चंद्रकला जी म. आदि ठाणा, आदिनाथ स्थानक-पुणे

साध्वी पू. श्री विचक्षणा जी म. आदि ठाणा, चिंचवड स्टेशन

महासाध्वी पू. श्री सुव्रता जी म. आदि ठाणा, शिवपुरी लुधियाना

महासती पू. श्री पुष्पकुंवर जी म. आदि ठाणा, इंदौर (मध्य प्रदेश)

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

श्रीमान् रतनलाल जी मेहता जैन का निधन

चित्तौडगढ़ (राजस्थान) : सरलमना सुश्रावक, साहित्यकार श्री दिलीप धींग जैन के मामाजी श्री रतनलाल मेहता जैन (बड़ी सादड़ी वाले) का 23 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। आप, अपने पीछे एक भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। प्रेषक : दिलीप धींग जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

अरिहंत नगर, दिल्ली में महासाध्वी किरण जी म. का चातुर्मास प्रवेश

मॉडल टाउन दिल्ली में महासाध्वी मनीषा जी म. का चातुर्मास प्रवेश

उप-प्रवर्तिनी पू. श्री सन्मतिकंवर जी म. आदि ठाणा येरवडा, पुणे स्थानक भवन

श्री मंजुल ज्योति जी म. आदि ठाणा का पुष्कर साधना केंद्र स्थानक उदयपुर में चातुर्मास मंगल प्रवेश

साध्वी रत्न श्री शीतल जी म., साध्वीरत्न श्री श्रुति जी म. आदि ठाणा का उदयपुर में चातुर्मास प्रवेश

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
varmalaya POLUR TIRUVANNAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 01-08-2026
Date of Posting : 07/08-08-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 21 ❊ पृष्ठ : 8
माह : अगस्त ❊ सप्ताह : 01 अगस्त से 07 अगस्त

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

दान, धर्म, शिक्षा और संगठन के शिल्पी : स्वर्गीय श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभभाई जोहरी

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ तथा स्थानकवासी जैन समाज का इतिहास अनेक ऐसे महापुरुषों की तपस्या, त्याग और समर्पण से निर्मित हुआ है, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से कहीं अधिक समाज और धर्म को महत्व दिया। ऐसे ही यशस्वी व्यक्तित्वों में स्वर्गीय श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभभाई जोहरी (जयपुर) का नाम अत्यंत आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे केवल एक सफल उद्योगपति नहीं थे, बल्कि दानवीर, शिक्षाप्रेमी, धर्मनिष्ठ, दूरदर्शी संगठनकर्ता और समाज जीवन के ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व थे, जिनकी सेवाओं का ऋण स्थानकवासी जैन समाज कभी नहीं चुका सकता।

सन् 1900 में जन्मे श्री विनयचन्द्रभाई ने अपने पिता स्वर्गीय श्री दुर्लभभाई जोहरी से सेवा, दान और धर्म के संस्कार प्राप्त किए। दुर्लभभाई जोहरी स्वयं अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस तथा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रमुख संगठनकर्ताओं में थे। उन्होंने जिस सेवा-परंपरा की नींव रखी, उसे श्री विनयचन्द्रभाई ने अपने कर्म, नेतृत्व और उदारता से नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

सन् 1942 में, जयपुर में उन्होंने जवाहरात के व्यापार को स्थापित कर अभूतपूर्व सफलता प्रदान की। अपने व्यावसायिक कौशल और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि के कारण वे उस समय लगभग 12 से 15 बार अमेरिका और यूरोप की यात्राओं पर गए, जो उस युग में अत्यंत दुर्लभ उपलब्धि मानी जाती थी। व्यापार से उन्होंने पर्याप्त संपन्नता अर्जित की, किंतु उस धन को व्यक्तिगत वैभव का साधन न बनाकर धर्म, शिक्षा और समाज सेवा में अर्पित कर दिया। उस समय उनके द्वारा किए गए लाखों रुपये के दान का मूल्य आज करोड़ों रुपये के समतुल्य माना जा सकता है।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के सर्वोच्च नेता पिता श्री दुर्लभभाई जोहरी के देहावसान के पश्चात श्री विनयचन्द्रभाई ने समाज सेवा का दायित्व पूरी निष्ठा से संभाला। वे अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के लगभग प्रत्येक राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रमुख रूप से उपस्थित रहते थे और संगठन की योजनाओं एवं निर्णयों में उनकी सक्रिय भूमिका रहती थी। समाज में उनकी प्रतिष्ठा, संतों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और संगठन के प्रति उनके समर्पण ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर के नेतृत्वकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति में स्थापित कर दिया।

उनके सार्वजनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय भिनासर (बीकानेर) में आयोजित जैन कॉन्फ्रेंस का ऐतिहासिक अधिवेशन रहा। इस अधिवेशन में उन्होंने सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में समाज के समक्ष अपना दायित्व ग्रहण किया। उनका अध्यक्षीय नेतृत्व समाज में संगठन, समन्वय और सेवा की नई चेतना का प्रतीक बना। उन्होंने सदैव समाज को एकसूत्र में बाँधने और संतों की प्रेरणा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

श्री विनयचन्द्रभाई को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अनेक आचार्यों एवं पूज्य संतों का स्नेह, आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वे संतों की इच्छाओं को समाज में मूर्त रूप देने वाले विरले श्रावकों में थे। धार्मिक आयोजन हों, सामाजिक योजनाएँ हों अथवा संगठनात्मक दायित्व-वे प्रत्येक कार्य में अग्रणी भूमिका निभाते थे। यही कारण था कि संत समाज उन्हें अत्यंत विश्वास और सम्मान की दृष्टि से देखता था।

शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। जयपुर के सुबोध जैन विद्यालय के विकास में उनका महत्वपूर्ण सहयोग रहा, जो आगे चलकर महाविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। उन्होंने 5,000 की उस समय की अत्यंत बड़ी धनराशि प्रदान कर जयपुर में गुजराती जैन विद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा उसके शिलान्यास का शुभ कार्य भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के कर-कमलों से सम्पन्न कराया। यह उनकी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा, दूरदृष्टि और समाजहित के प्रति उनके व्यापक चिंतन का परिचायक था।

वे शिक्षा को समाज के उत्थान का सबसे प्रभावी माध्यम मानते थे। इसी भावना से प्रेरित होकर वे सन् 1940 के दशक में अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के माध्यम से प्रतिवर्ष लगभग 3,000 की राशि स्थानकवासी जैन विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा के लिए प्रदान करते थे। उस समय यह अत्यंत बड़ी राशि थी, जिससे अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। उनके लिए शिक्षा पर किया गया व्यय समाज के भविष्य में किया गया निवेश था।

जैन कॉन्फ्रेंस के स्थायी मुख्यालय के निर्माण में भी उनका योगदान ऐतिहासिक है। जब जैन कॉन्फ्रेंस भवन की 'मंगल मुहूर्त योजना' का शुभारंभ हुआ, तब श्री विनयचन्द्रभाई जोहरी और उनके भ्राता श्री खेलशंकरभाई दुर्लभभाई जोहरी ने संयुक्त रूप से 50,000 की विशाल धनराशि दान देकर इस अभियान का शुभारंभ कराया। यह उस समय का अभूतपूर्व योगदान था। आज भी दिल्ली स्थित अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन की प्रथम मंजिल पर स्थित विशाल सभागार 'दुर्लभजी हॉल' के नाम से सुशोभित है। वहाँ स्थापित शिलापट्ट इस महान परिवार की अद्वितीय सेवा, त्याग और दानशीलता का जीवंत प्रमाण है।

श्री विनयचन्द्रभाई जोहरी का जीवन इस बात का अनुपम उदाहरण है कि धन तभी सार्थक है, जब वह समाज के कल्याण में समर्पित हो, नेतृत्व तभी सफल है, जब उसमें सेवा का भाव हो, और धर्म तभी जीवंत है, जब वह शिक्षा, संस्कार, संगठन और करुणा के रूप में समाज के जीवन में उतरता हो।

आज स्थानकवासी जैन समाज, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ और अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस जिस सुदृढ़ आधार पर खड़े हैं, उसमें स्वर्गीय श्री विनयचन्द्रभाई दुर्लभभाई जोहरी और उनके परिवार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका जीवन सेवा, दान, शिक्षा, संगठन और धर्मनिष्ठा का ऐसा उज्ज्वल अध्याय है, जो आने वाली पीढ़ियों को निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

(शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत के दुर्लभ दस्तावेज संग्रह के आधार पर)

जैन गौरव

ऋषभपुत्र भरत से भारत

ऋषभदेव का उल्लेख वेदों से पूर्व ही आता है। ऋषभदेव ही भारतीय साहित्य, विद्या-कला, राजनीति के प्रथम उपदेष्टा हैं। ऋषभदेव ने ही राज्य-व्यवस्था का बड़ा सफल सूत्रपात किया था। ऋषभदेव ने ही विभिन्न जनपद, ग्राम आदि तथा साम-दाम-दण्ड-भेद आदि नीतियों की स्थापना की थी।

धर्म के अनुसार मनुष्य एक जाति है। अतः किसी भी प्रकार के ऊँच-नीच का प्रश्न ही नहीं। आजीविका को व्यवस्थित रूप देने के लिये क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्णों की स्थापना की थी। ब्राह्मण वर्ण की स्थापना आगे चलकर चक्रवर्ती भरत ने की थी। यह सारी व्यवस्था कर्म से थी।

ऋषभदेव से असि (तलवार), मसि (लेखन कला), कृषि (खेती), वाणिज्य (व्यापार), विद्या (लिपि व अंक ज्ञान) और शिल्प (विभिन्न कलायें) इन छह कर्मों का उपदेश देकर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी। यही से मानव जीवन राज्य, समाज, धर्म और अर्थ संस्थाओं का वैधानिक विकास तीव्रता से हुआ। इन सबका श्रेय समाज को सुसंस्कृत और सुख सम्पन्न बनाना था। लिंग पुराण (अध्याय-47) में कहा गया है कि ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस देश को भारत वर्ष कहते हैं।

जैन समाज का गौरव : श्री अनुराग जैन (IAS) नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त

भारत सरकार ने वर्ष 1989 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्री अनुराग जैन को देश के सर्वोच्च नीति निर्धारण संस्थान नीति आयोग का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त किया है। उनकी यह महत्वपूर्ण नियुक्ति जैन समाज के लिए गर्व और सम्मान का विषय है।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से श्री अनुराग जैन को इस प्रतिष्ठित दायित्व के लिए हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ। हमें पूर्ण विश्वास है कि वे अपने व्यापक प्रशासनिक अनुभव, दूरदर्शी नेतृत्व और जनसेवा के प्रति समर्पण से राष्ट्र के विकास एवं सुशासन को नई दिशा प्रदान करेंगे।

जैन समाज के इस गौरवपूर्ण क्षण पर श्री अनुराग जैन को हार्दिक शुभकामनाएँ। उनके सफल, यशस्वी एवं जनकल्याणकारी कार्यकाल की मंगलकामना।

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906